International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 696-700

हिन्द–यवन एवं कुषाण शासकों के सिक्कों पर अंकित देवी–देवता

अतुल कुमार सिंह

शोध छात्र, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व अध्ययनशाला, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्य प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

मौर्योत्तर युग में भारत पर विदेशी आक्रमणकारियों में प्रथम यूनानी, यवन, इंडो–ग्रीक, हिन्द–यूनानी या बैक्ट्रियन ग्रीक थे। मध्य एशिया की तत्कालीन राजनीति से बाध्य होकर उन्हें भारत–विजय की योजना बनानी पड़ी।

मेसीडोन के तरूण विजेता सिकन्दर ने 326 ई0पू0 में हिन्दूकुश को पार कर भारतीय सीमा में प्रवेश किया। पश्चिमोत्तर भारत इस समय अनेक छोटे–छोटे राज्यों में विभक्त था, जिसकी अल्पसंख्यक तथा असंगठित सेनाएँ भीषण संघर्ष के बाद भी उसकी विशाल एवं संगठित सेना के समक्ष टिक न सकी और पंजाब व सिन्ध के अधिकांश क्षेत्रों पर उसका अधिकार हो गया। इसी प्रकार से झेलम के पूर्व में स्थित कैकय प्रदेश के शासक पुरू के साथ सिकन्दर का भयंकर युद्ध हुआ और पुरू भी सिकन्दर से कड़ा संघर्ष करने के पश्चात अन्त में पराजित हुआ और सिकन्दर झेलम से पूर्व के क्षेत्रों पर भी विजय प्राप्त करता हुआ व्यास के तट तक आया। परन्तु निरन्तर युद्धों से आहत होकर यूनानी सैनिकों ने आगे बढ़ने से मना कर दिया। परिणामतः सिकन्दर को व्यास नदी के तट से वापस होना पड़ा और वापस जाते समय 323 ई0पू0 में सिकन्दर की बेबीलोन में मृत्यु हो गयी। पुत्रहीन होने के कारण सिकन्दर की मृत्यु के बाद उसका साम्राज्य उसके सेनापतियों में विभक्त हो गया और सेल्यूकस को सिकन्दर के साम्राज्य का पूर्वी भाग प्राप्त हुआ। सीरिया को केन्द्र बनाकर सेल्यूकस और उसके वंशजों ने भारत के मौर्यवंशी शासकों के समान ही पश्चिमी एशिया पर शासन किया। सिकन्दर की विजय के परिणामस्वरूप बैक्ट्रियन यवनों के लिए भारतीय क्षेत्रों पर अधिकार करने का द्वार खुल गया और बैक्ट्रिया के यवन शासक भारत पर विजय प्राप्त करने का स्वप्न देखने लगे।

यूनानी इतिहासकारों के विवरण तथा बख्त्री यवनों के सिक्के मौर्योत्तर कालीन पश्चिमोत्तर भारत के इतिहास पर महत्वपूर्ण प्रकाश डालते है। यूक्रेटाइडीज ने भी डिमेट्रियस की तरह पश्मोत्तर भारत के विभिन्न क्षेत्रों पर अधिकार करके द्विभाषी सिक्के चलाये, आगे चलकर बैक्ट्रिया के कई यवन शासकों ने पश्चिमोत्तर भारत पर अपना शासन किया और इनके शासन काल के मुखर साक्षी इनके द्वारा प्रचलित मुद्राएँ है। जिससे लगभग 36 शासकों के इतिहास का ज्ञान उनके द्वारा प्रचलित मुद्राओं से होता है।

कुषाणों की पृष्ठभूमि : कुषाण जाति यू–ची जाति की एक शाखा थी। यू–ची जाति चीन के उत्तर–पश्चिमी क्षेत्र में निवास करने वाली एक घूमन्तु जाति थी। द्वितीय शताब्दी ई0पू0 के उत्तरार्द्ध में इनके ऊपर एशिया की दूसरी बर्बर जाति हूणों ने आक्रमण किया। इस आक्रमण के परिणामस्वरूप कुषाण अपने मूल निवास स्थान से विस्थापित होने के लिए बाध्य हो गये होंगे और यू–ची जाति दक्षिण की ओर बढ़ती हुई इली घाटी पहुँची और वहाँ निवास करने वाली वू–सून जाति पर आक्रमण किया। आक्रमण के बाद यू–ची जाति इली घाटी में अधिक समय तक नहीं रह सकी और पुनः दक्षिण की ओर बढ़ते हुए सीरदरिया पहुँचे। सीरदरिया में शक जाति का निवास था। यहाँ पर भी यू–ची जाति ने शक पर आक्रमण किया और उन्हें पराजित कर सीरदरिया को अपना निवास स्थान बनाया। यहाँ पर उन्हें ''हूण'' एवं वू–सून जाति के सम्मिलित आक्रमण का सामना करना पड़ा और ''वू–सून'' एवं ''हूण'' जातियों दोनों से पराजित होकर एक छोटी शाखा दक्षिण की ओर बढ़ती हुई तिब्बत में पहुँची और तिब्बत में अपना नया स्थान बनाकर बस गई और उसकी प्रमुख शाखा दक्षिण पश्चिम की ओर बढ़ती हुई ताहिया में पहुँची और ताहिया को केन्द्र बनाकर यू–ची जाति ने वहाँ लम्बे समय तक निवास किया तथा यहाँ पर अपना राज्य स्थापित किया।

चीनी ग्रन्थों के अनुसार आगे चलकर यूची जाति पाँच शाखाओं में विभक्त हुई जो कि आगे चलकर काओं–फू तुन, शुआंग–मी एवं कुई शुआंग शाखाओं के अलग–अलग राज्य में स्थापित हुए और कालान्तर में कुई–शुआंग शाखा का सरदार क्यू–त्स्यू–क्यू शक्तिशाली योद्धा हुआ और उसने अन्य चार शाखाओं पर आक्रमण करके सभी को अपने राज्य के अधीन कर लिया एवं राजनीतिक एकीकरण स्थापित किया। इनके बारे में अनेक इतिहासकारों का मानना है, कि यूची जाति कुई–शुआंग शाखा ही कालान्तर में कुषाण राजवंश के नाम से प्रसिद्व हुई।

हिन्द–यवन मुद्राओं की विशेषताए : सामान्यतया एक जिज्ञासा प्रस्तावित की जाती है कि भारत में यूनानी मुद्राओं का प्रारम्भ कब हुआ गार्डनर, पर्सिब्राउन, लाहरी ए0के0 नारायण प्रभृति विद्वानों ने इस पर विचार किया है, जिसका निष्कर्ष यह है कि सिकन्दर की मृत्यु के उपरान्त विशाल साम्राज्य का सिकन्दर के उत्तराधिकारी सेनानियों में बँटवारा हो गया, जिसमें सर्वाधिक सशक्त सेनानी सेल्यूकस था, जिसका सीरिया में स्वतंत्र राज्य स्थापित था और उसका विस्तार पश्चिम में फरात नदी से लेकर पूरब में बंक्षु तक था। सेल्यूकस के समय अर्थात तृतीय शताब्दी ईसवी पूर्व के उपरान्त द्वितीय शताब्दी ईसवी पूर्व से बैक्ट्रिया के शासक तथा यूनानियों के समय से भारत में हिन्द–यवन मुद्राओं का इतिहास प्रारम्भ होता है।

इन बख्त्री शासकों में मिनेण्डर सर्वाधिक शक्तिशाली था। उसका साम्राज्य न केवल गान्धार पंजाब प्रान्त तक ही सीमित रहा वरन् प्रो0 जी0आर0 शर्मा द्वारा समुद्घाटित रेह (फतेहपुर) अभिलेख के आधार पर इसका सैन्य अभियान गंगा घाटी में भी स्वीकार किया जा सकता है। यूक्रेटाइडीज और मिनेण्डर की मृत्यु के पश्चात् भारत के बख्त्री राजाओं का इतिहास अस्पष्ट है। सिक्कों के आधार पर ही भारत में शासन करने वाले 22 बख्त्री शासकों का परिचय प्राप्त होता है।

डायोडोटस द्वितीय और यूथिडेमस की मुद्राएँ प्रमुखतः यूनानी प्रकार की है। इन मुद्राओं की कुछ अपनी विशेषताएँ भी है।

चूँकि इन मुद्राओं का निर्माण बैक्ट्रिया में ही हो रहा था, जिस कारण इन सिक्कों पर बैक्ट्रिया का प्रभाव होना स्वाभाविक था, ये मुद्राएँ यूनानी शैली में बनी हुई है जो वृत्ताकार एवं कलात्मक है। इन मुद्राओं पर यूनानी देवी–देवताओं का अंकन मिलता है, जिस पर लेख भी यूनानी भाषा एवं लिपि में ही अंकित है। यूथिडेमस के उत्तराधिकारियों ने जब पश्चिमोत्तर भारत पर आक्रमण कर गान्धार में अपना राज्य स्थापित किया और इस भू–भाग में जो मुद्राएँ प्रचलित की गयी वे बैक्ट्रिया की यवन मुद्राओं से भिन्न है तथा इन मुद्राओं पर भारतीय तत्वों का प्रभाव भी स्पष्ट दिखाई देता है। यहाँ पर बख्त्री–यवन एवं हिन्द–यवन मुद्राओं में अन्तर को स्पष्ट करने वाले निम्नलिखित तथा उल्लेखनीय है।

1. हिन्द–यवन मुद्रायें यवन मुद्राओं की तुलना में कलात्मक दृष्टि से हीन है।
2. ये मुद्राएँ तौल तथा माप में भी यवन सिक्कों से भिन्न है। बैक्ट्रिया में चलायी गई प्रारम्भिक यवन शासकों की मुद्रायें एटिस तौल में है जबकि भारतीय क्षेत्रों पर चलाई गई मुद्रायें द्राख्यम एवं हेमी द्राख्यम में है।
3. मुद्राओं के आकार में भी परिवर्तन है बख्त्री मुद्राएँ केवल वृत्ताकार है जबकि हिन्द–यवन मुद्राएँ चौकोर है।
4. हिन्द–यवन मुद्राओं पर भारतीय देवी–देवताओं की आकृति का भी अंकन है जबकि बख्त्री–यवन मुद्राओं पर ऐसा नहीं है।
5. हिन्द–यवन शैली के अन्तर्गत द्विभाषी मुद्राओं का प्रचलन हुआ। पुरोभाग पर यूनानी लिपि में राजा का नाम अंकित होने लगा तथा पृष्ठ भाग पर खरोष्ठी लिपि में उसी अनुवाद अंकित किया जाने लगा।

उपर्युक्त परिवर्तन के कारण भारत में प्रचलित हिन्द–यूनानी मुद्राएँ बैक्ट्रिया की मुद्राओं से भिन्न दिखाई देती है।

हिन्द–यवन शासकों की मुद्राएँ अधिकांशतः ताम्र एवं रजत की है और स्वर्ण निर्मित मुद्राएँ संख्या में कम है। बैक्ट्रिया कें आरम्भिक शासकों में डायोडोटस एवं यूथिडेमस ने मुद्राओं के निर्माण में सर्वप्रथम स्वर्ण का उपयोग किया था, जिसमें भारतीय यवन शासकों में यूक्रेटाइडीज तथा मिनेण्डर ने भी कुछ स्वर्ण की मुद्राओं का निर्माण कराया था, सोने की मुद्राएँ स्टेटर तथा रजत के द्रख्म कहे जाते थे।

सामान्यतया ताम्र मुद्राएँ चौकोर तथा रजत मुद्राएँ वृत्ताकार है। अपवादस्वरूप फिलाक्जेनस और अपोलोडोटस की रजत मुद्राएँ चौकोर है। अगाथोक्लीज और पेन्टालियन के निकिल के भी सिक्के प्राप्त हुए है। उल्लेखनीय है कि विश्व में सर्वप्रथम निकिल की मुद्राएँ कदाचित इन्होंने ही चलाई होगी। यूथिडेमस की भी कुछ निकिल की मुद्राएँ प्राप्त होती है। स्ट्रैटो द्वितीय ने शीशे की भी मुद्राओं का प्रचलन किया था। आरंभिक शासकों की रजत मुद्राएँ जिन्हें द्रख्म कहते थे, 66 ग्रेन की है, अर्द्ध द्राख्म 33 ग्रेन के बराबर थी। किन्तु स्वर्ण मुद्राएँ 132 अथवा 130 ग्रेन के तौल की होती थी। भारतीय क्षेत्र पर अधिकारों के बाद पारसिक द्रख्म ने इस तौल को स्वीकार किया और मुद्राएँ 84 ग्रेन की बनाई जाने लगी। उल्लेखनीय है कि भारत के पश्चिमोत्तर भाग पर यवनों के पूर्व पारसिक का अधिकार था और तौल की इस परम्परा का प्रारम्भ डिमेट्रियस की मुद्राओं में दिखाई देने लगता है।

कनिंघम महोदय को कुछ सिक्के 37 ग्रेन के भी प्राप्त हुए है। जहाँ तक मुद्राओं पर अंकित लिपि एवं भाषा का प्रश्न है, तो भारत में यूनानी शासन प्रारम्भ होने से पूर्व सेल्यूकस के उत्तराधिकारी यूनानी लिपि तथा यूनानी भाषा में शासक का नाम उपाधि सहित यूनानी भाषा में प्राप्त होता है। डिमेट्रियस ने भारत पर आक्रमण के पश्चात् उत्तर–पश्चिमी भू–भाग पर द्विभाषी मुद्राओं का प्रचलन प्रारम्भ किया। इन द्विभाषी मुद्राओं के पुरोभाग पर यूनानी भाषा तथा रोमन लिपि में एवं पृष्ठभाग पर प्राकृत भाषा एवं खरोष्ठी लिपि में लेख अंकित है। अगाथोक्लीज पहले ऐसे हिन्द–यवन शासक थे जिन्होंने अपनी मुद्रा पर ब्राह्मी लिपि को स्थान दिया। हिन्द–यवन शासकों की मुद्राओं पर निम्नलिखित उपाधियाँ एवं अंकन प्राप्त होते है।

मुद्राओं पर प्राप्त अंकन–हिन्द : यवन मुद्राओं के पुरोभाग पर सामान्यतः राजा का आवक्ष चित्र अथवा मुख्य भाग का अंकन प्राप्त होता है। केवल एन्टीमेकस की मुद्राओं पर राजा अश्वारूढ़ दिखायी देता है। कुछ मुद्राओं के पुरोभाग पर यूनानी देवता, धार्मिक चिन्ह अथवा पशु का अंकन प्राप्त होता है, जबकि पृष्ठभाग पर सामान्यतः किसी देवी–देवता को चित्रित किया गया है। स्वाभाविक रूप से ये देवी–देवता यूनानी देवमण्डल से ग्रहण किये गये है। यूनानी देव परिवार में सबसे महत्वपूर्ण देवता जीयस है। अधिकांश देवी–देवता इसी के पुत्र–पुत्रियाँ है।

जियस : यह आकाश में होने वाले क्रियाकलापों का देवता है। सारा देव समाज और प्रकृति इसी के अधीन है। मुद्रा पर यह स्थानक एवं सिंहासनारूढ़ दोनों ही रूपों में प्रदर्शित है। कुछ मुद्राओं पर यह हाथ पर चील पक्षी अथवा हेकेट धारण किये हुए था, इसे मुद्राओं पर वज्र एवं राजदण्ड लिये दिखाया गया है।

हेराक्लीज : यह जियस का पुत्र है, यूनानी परम्परानुसार यह बल का देवता है। सामान्यतः मुद्रा पर यह गदा एवं व्याघ्रचर्म धारण किये हुए प्रदर्शित किया गया है। मुद्राओं पर इसका दाढ़ीयुक्त आवक्ष का अंकन भी प्राप्त होता है।

डायोनियस : यह जियस का पुत्र है। मुद्रा पर इसका आवक्ष चित्र प्राप्त होता है।

अपोलो : यह भी जियस का पुत्र है, इसे संगीत प्रकाश और चिकित्सा का देवता माना जाता है। यह कल्याण एवं स्वास्थ्य का जनक है। यह यूनानी सूर्य देवता है, धनुष और बाण इसका अस्त्र है।

पेसीडोन : यह जियस के दो पुत्रों के सम्मिलित नाम है। ये दोनों पुत्र कैस्टर व पोलस है। ये दोनों अश्व प्रशिक्षक है और मुक्केबाजी के आचार्य है। इनका अंकन सामान्यतः अश्वारूढ़ रूप में साथ–साथ मिलता है। कभी–कभी इनके स्थान पर इनके प्रतीकों का अंकन कर दिया जाता था। इनका प्रतीक दो टोपियाँ और खजूर की दो टहनियाँ है। कुछ मुद्राओं पर एकांकी रूप में भी इनका अंकन प्राप्त होता है।

पल्लास : इसका दूसरा नाम है पल्लास एथेना यह जीयस की पुत्री है। इसे प्रायः हाथ में टाल के ऊपर गार्गन की मुखाकृति बनी हुई है। यह आकाशीय देवी है। यह प्रकाश, उष्मा और ओस के रूप में वनस्पतियों को उर्वरता प्रदान करती है।

आर्टीमीज : यह जियस की पुत्री तथा अपोलो की जुडवाँ बहन है। इसके हाथ में धनुष–बाण एवं पीठ पर तरकस लिये दिखाया गया है। यह शिकार की देवी है।

भारतीय देवता–यक्षिणी आकृतियाँ : इनकी मुद्राओं पर भारतीय देवी–देवताओं का अंकन भी प्राप्त होता है किसी–किसी मुद्रा पर ऐसी नारी आकृतियाँ है, जिनकी पहचान यूनानी देवी से नहीं की जा सकती है, कुछ मुद्राशास्त्रियों का अनुमान है कि ये यक्षिणी आकृतियाँ है।
अगाथोक्लीज और पेन्टालियान की मुद्राओं पर ऐसी आकृतियाँ देखी जा सकती है। अगाथोक्लीज की एक मुद्रा पर मूसल लिये संकर्षण तथा चक्रधारी वासुदेव का अंकन प्राप्त होता है। उल्लेख है कि भागवत धर्म के वासुदेव का मूर्ति रूप में यह प्राचीनतम अंकन है। देवी–देवताओं के अतिरिक्त उनके प्रतीक चिन्ह भी इन मुद्राओं पर प्राप्त होते है। जो निम्न प्रकार हैः–

वज्र : यह जियस का आयुध है। इसे पंखयुक्त प्रदर्शित किया गया है।
ट्राइडेन्ट–यह कुल्हाड़ी युक्त त्रिशूल है एवं पेसीडोन का आयुध है।

स्तूप : अगाथोक्लीज की मुद्रा पर शंक्वाकार स्तूप का अंकन प्राप्त होता है।

त्रिपाद–यह तिपाई है, यूनानी परम्परानुसार जीयस को प्रसन्न करने के लिए इसी पर लिटाकर नरबली दी जाती थी।

चक्र : इसका अंकन मिनेण्डर की मुद्राओं पर हुआ है। कुछ इतिहासकार इसका सम्बन्ध बौद्धधर्म के साथ जोड़ते है।

कुषाण–मुद्राओं पर दैवी–आकृतियों का अंकन : कुषाण–मुद्राओं की मुद्रा–शास्त्रीय मीमांसा के साथ–साथ उन पर अंकित विभिन्न दैवी–आकृतियों की प्रतिमा–शास्त्रीय एवम् पौराणिक आख्यानों की दृष्टि से सुसमीक्षा भी सर्वथा सम्भावित हो जाती है। विवेचित मुद्राओं पर चार विभिन्न धर्मो से सम्बन्धित देवताओं का अंकन सुलभ होता है, यथा ग्रीकोरोमन, पारसीक, जरथुष्ट, ब्राह्मण एवम् बौद्ध।
कुजुल–कडफिसस की मुद्राओं पर भारतीय देवता शिव, कनिष्क की मुद्राओं पर सभी धर्मो के देवता–शिव बुद्ध हेलियस, मिहिर, आर्दोक्षों, नाना, हुविष्क, की मुद्राओं पर उक्त देवताओं के अतिरिक्त स्कन्द, कार्तिकेय, वासुदेव की मुद्राओं पर केवल हिन्दू देवता–शिव तथा पारसीक देवता आर्दोक्षों इत्यादि का अंकन प्राप्त होता है।

हेराक्लीज : इसका अंकन कुजुल कडफिसस की ताम्र–मुद्राओं पर हुआ है। इसी देवता का अंकन ठीक उसी रूप में एजेज, बोनोनेस, माओस इत्यादि यूनानी राजाओं की मुद्राओं पर तथा हिन्द–यवन राजा डेमेट्रियस की मुद्राओं पर भी प्राप्त हुआ है। प्रारम्भिक यूनानी आख्यानों में हेराक्लीज को मनुष्य और नगरों का विजेता, तथा मानवीय हीरों के रूप में वर्णन प्राप्त होता है। होमर ने इसे जीयस का पुत्र बताया है।

जियस : कुषाण–ताम्र–मुद्राओं पर जीयस की आकृति का अंकन हुआ है। जियस खड़ी मुद्रा में अनेक यूनानी सम्राटों की मुद्राओं पर भी प्रदर्शित है। होमर ने जियस को यूनानी देव मण्डल का प्रमुख देवता बताया है। मुख्यतया यह आकाशीय देवता था। यह विचार प्रस्तुत किया जाता है कि यूनानी देवता जीयस में हमें भारतीय देवराज इन्द्र का निरूपण प्राप्त होता है।

हेलियास : कनिष्क की स्वर्ण और रजत मुद्राओं पर इसका अंकन प्राप्त होता है। बैक्ट्रिया के यूनानी राजाओं की मुद्राओं पर हेलियास चार घोड़ों वाले रथ की सवारी करते हुए प्रदर्शित है। यह आकृति भारतीय देवता सूर्य के समतुल्य है। होमर ने हेलियास को मानव और देव दोनों को प्रकाश देने वाले देवता के रूप में चित्रित किया है।

सेलेने : इस देवता का निदर्शन कनिष्क की मुद्राओं पर होता है। इस चन्द्रदेव की आकृति ठीक सूर्य देव जैसी है। अन्तर केवल इतना है कि रश्मियों के स्थान पर सिर के पीछे अर्द्ध चन्द्र बना हुआ है। यूनानी पौराणिक आख्यानों में इसे हेलियास की बहन बताया गया है। सेलेने को होमर ने सुन्दर देवी के रूप में चित्रित किया है परन्तु मुद्राओं पर यह पुरुष देवता के रूप में अंकित है।

सेरापीज : हुविष्क की स्वर्ण–मुद्राओं पर बाएँ हाथ में भाला लिये तथा सिंहासन पर
बैठे यह देवता प्रदर्शित है। इसमें यह विचार व्यक्त किया जाता है कि सेरापीज मूल रूप से मिस्र का देवता था जिसकी पूजा यूनान में 'पतोलेमीज' के समय में प्रारम्भ हुई।

रियाम : हुविष्क की स्वर्ण मुद्राओं पर इस देवता की आकृति का अंकन हुआ है। इस प्रकार की आकृति यूनानी, शक और पार्थियन मुद्राओं पर प्रयोग की जाती थी। इसके अतिरिक्त भी अन्य कई यूनानी देवताओं का प्रदर्शन कुषाणों की मुद्राओं पर सुलभ है इनमें 'यूरैनस' और 'हेफैस्टस' भी अतीव महत्वपूर्ण है। जिनका तादात्म्य क्रमशः ऋग्वैदिक–देवता वरूण और विश्वकर्मा से किया जाता है।

अयशोदेवता : इस देवता का अंकन कनिष्क और हुविष्क दोनों की मुद्राओं पर दर्शनीय है। यह अग्नि से सम्बन्धित देवता प्रतीत होता है क्योंकि प्रस्तुत नरेशों की मुद्राओं पर अग्नि के ही विभिन्न स्वरूपों के साथ इसका अंकन दृष्टिगोचर है। यह जोरोस्ट्रीयन सम्प्रदाय से सम्बन्धित देवता है। अवेस्ता के विभिन्न प्रार्थनाओं और स्त्रोतों में इसका वर्णन संदर्भित है।

माओं : इस देवता का भी अंकन कनिष्क और हुविष्क की मुद्राओं पर विभिन्न प्रतीकों के साथ हुआ है। यह ईरानी चन्द्र देवता है। अवेस्ता में इसकी महत्ता और प्रभाव की भूरि–भूरि प्रशंसा की गई है। यूनानी देवता सेलेने और ईरानी देवता माओं में पर्याप्त साम्य दृष्टिगोचर होता है।

मिहिर देवता : सूर्य देवता मिहिर का अंकन हुविष्क की स्वर्ण तथा कनिष्क की ताम्र–मुद्राओं पर देखा जाता है। यह यूनानी देवता हेलियॉस के समस्तरीय है।
''मिहिर'' परसियन मिहर का संस्कृत रूप है। जो वैदिक ''मित्र'' तथा अवेस्टिक ''मिथ्र'' का भ्रष्ट रूप प्रतीत होता है।

आर्दोक्षोदेवी : विभिन्न रूपों में आर्दोक्षों का अंकन कनिष्क हुविष्क और वासुदेव के स्वर्ण–सिक्कों पर प्राप्त होता है। यथा कार्नुकोपिया हाथ में लिये हुए सिंहासनासीन, प्रभामण्डल युक्त इत्यादि। इसे भाग्य और समृद्धि की देवी के रूप में स्वीकार किया जाता है ओर इसे भारतीय ''लक्ष्मी'' तथा यूनानी देवी ''ताइके'' के समस्तरीय किया गया है। ''अशि'' और शतपथ ब्राह्मण में वर्णित ''श्री'' का स्वरूप एक –दूसरे के अत्यन्त

सनिकर्ष में है। आर्दोक्षों के हाथ में कार्नुकोपिया भारतीय लक्ष्मी के हाथ में कमल का स्मरण दिलाता है।

अहुरमज्दा : कनिष्क की किन्ही स्वर्ण–मुद्राओं पर इसका अंकन प्राप्त होता है। यह दो सिर वाले घोड़े पर सवार के रूप में तथा हुविष्क के कुछ सिक्कों पर दाढ़ी रखे हुए पुरूष आकृति के रूप में ''वोरोमज्दो'' लेख के साथ प्रदर्शित है अवेस्ता में इस देवता का वर्णन प्राप्त होता है। अच्छाई और बुराई के दो आदिम सिद्धान्तों का संयुक्त रूप अहुरमज्दा है। कनिंघम की प्रस्तावना है दो सिर वाले घोड़े का अभिप्राय इसी सिद्धान्त से सम्बन्धित है।

हिन्दू–दैवाकृतियों का अंकन : ओयशों–ओयशों अर्थात 'शिव' का अंकन कडफिसस, कनिष्क, हुविष्क और वासुदेव की मुद्राओं पर सर्वथा सुलभ है। कुषाण मुद्राओं पर शिव कई रूपों में दर्शनीय है जैसे दो कूबड़ वाले वृषभ के साथ त्रिमुखी शिव, हाथ में परशु लिए हुए, चतुर्भुजी रूप में, नन्दी के साथ हाथ में पुष्प सदृश कुछ लिए हुए ओम्मो लेख के साथ देवी का अंकन जिसे उमा माना जाता है।
मुद्राओं पर शिव के हाथ में '' पाश'' का प्रदर्शन शिव के संहारक रूप में समीकृत किया जा सकता है।

कार्तिकेय : हुविष्क की मुद्राओं पर विभिन्न नामों से संकेतित, आलोचित देवता के अंकन को वैदुष्य विवेचन का विषय बनाया गया है। हुविष्क की मुद्राओं पर कुल मिलाकर चार नामों का निदर्शन प्राप्त होता है, स्कन्द, कुमार, विशाख और महासेना। डा0 डी0आर0 भण्डारकर ने 'अमरकोष' के दो श्लोकों के आधार पर यह मत प्रस्तावित किया है कि ये चारों नाम विभिन्न देवताओं से सम्बन्धित है। अमरकोष की चार पंक्तियों में स्कन्द, कुमार, विशाख और महासेना क्रमशः उल्लिखित है। आर0जी0 भण्डारकर ने हुविष्क की मुद्राओं पर अंकित तीन विभिन्न आकृतियों के तीन सम्बोधक नामों को स्वीकार किया है, स्कन्द–कुमार महासेना, विशाख। परन्तु यह कहना दुष्कर है कि हुविष्क की मुद्राओं पर तीन देवताओं का अंकन या अथवा एक ही देवता के तीन स्वरूपों का।

बुद्ध की आकृति का अंकन : बुद्ध की आकृति का अंकन कनिष्क की स्वर्ण और ताम्र मुद्राओं पर सर्वथा सुलभ है। बुद्ध को इन सिक्कों पर विभिन्न मुद्राओं में प्रदर्शित किया गया है, कुछ पर आसन मुद्रा में तो कुछ पर स्थानक मुद्रा में, कुछ सिक्कों पर इनका दाहिना हाथ ''वरद मुद्रा'' में दिखाया गया है, बाएँ हाथ में भिक्षा पात्र तथा मस्तक में पीछे प्रभा मण्डल युक्त प्रदर्शन है। कतिपय मुद्राओं पर बुद्ध व्याख्याता अधोवस्त्र और ऊर्ध्ववस्त्र जो वक्ष और कंधे को आच्छादित किए हुए है, का प्रदर्शन दृष्टिगोचर होता है। प्रतिमाशास्त्रीय ग्रंथों में प्रभा मण्डल को ''सिरस्चक्र'' के रूप में आख्यायित किया गया है, जो दैवी आकृतियों से सम्बद्ध माना जाता है। साक्ष्यों की सुसमीक्षा के उपरान्त विद्वानों की इस अवधारणा से अपने को संगत करना अधिक यथेष्ट प्रतीत होता है कि बुद्ध आकृति की स्पष्टतया प्रारम्भिक प्रदर्शन कनिष्क प्रथम की मुद्राओं पर ही हुआ है।

भारतीय मुद्रा पर प्रभाव : अन्ततः संक्षेप में यह चर्चित किया जा सकता है कि यूनानी मुद्राओं का भारतीय मुद्राओं पर किस सीमा तक प्रभाव पड़ा, यह प्रभाव एकांगी था अथवा यूनानी सिक्के भी भारतीय विधि से प्रभावित हुए, सुसमीक्षण के उपरान्त हम यह पाते है कि भारतीय आहत सिक्कों और यूनानी सिक्कों में मौलिक विभेद था। हालांकि यूनानी सिक्कों में बहुत सारे अभिनव तत्व सम्मिलित थे। यूनानी सिक्कों के आधार पर भारतीय सिक्कों को ढालने की विधि विकसित की गई। शक क्षत्रपों एवं कुषाण नरेशों ने उनका अनुकरण किया। कनिष्क तथा हुविष्क ने यूनानी देवी–देवताओं के अंकन को अपने सिक्कों में प्रमुख स्थान दिया। ग्रीक भाषा लिपि तथा तौल का भी अनुकरण किया। इस प्रकार द्वितीय शताब्दी ई0 तक यूनानी सिक्कों का प्रभाव भारतीय मुद्राओं पर पड़ता रहा। परन्तु यूनानी मुद्राएँ भी भारतीय प्रभाव से वंचित न रह सकी। खरोष्ठी लिपि का प्रयोग, ब्राह्मी लिपि का अंकन, भारतीय सिंह का अंकन, भारतीय देवी–देवताओं का अंकन अपोलोडोटस के सिक्कों पर शिव के वाहन नन्दी का अंकन इत्यादि। भारतीय परम्परा–प्रभाव का निदर्शक माना जा सकता है। हिन्द–यवन मुद्राओं के बाद वैदेशिक मुद्राओं का पुर्नप्रवर्तन अनेक भारतीय परिवर्द्धनों के साथ कुषाण युग में हुआ। हिन्द–यवन मुद्राओं से सम्बन्धित एक अन्य महत्वपूर्ण समस्या है कि वह अन्तिम शासक कौन–सा था, जिसने 'स्टेटर' अर्थात सुवर्ण–निर्मित मुद्राओं का प्रचलन कराया था।
इस सन्दर्भ में आँग्ल मुद्राशास्त्री ह्वाइटहेड ने विद्वानों का ध्यान यूक्रेटिडीज की मुद्राओं की ओर आकर्षित किया है। उसकी मुद्राओं के प्राप्ति–स्थानों से यह स्पष्ट है कि उसने बैक्ट्रिया से लेकर भारत के पश्चिमोत्तर भाग तक अपनी सत्ता विस्तृत की थी। इसने सोना, चाँदी तथा ताँबा तीनों धातुओं से निर्मित सिक्कों का प्रचलन कराया था। ह्वाइटहेड के अनुसार यूक्रेटडीज अन्तिम हिन्द–यवन शासक था जिसने ''स्टेटर'' नामक सुवर्ण सिक्कों का प्रचलन कराया था इसके सुवर्ण सिक्कों के पुरोभाग पर 'टोप पहने शासक की आकृति' का ऊर्ध्व भाग तथा पृष्ठतल पर यूनानी देवता अपोलो की आकृति तथा यूनानी लिपि में विरूद् सहित शासक के नाम का अंकन प्राप्त होता हैः–

मुद्राओं के अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व : उक्त सामान्य विवेचन के साथ–साथ हिन्द–यवन शासकों की मुद्राओं से सम्बन्धित विभिन्न पक्षों का विस्तार–विवेचन भी आवश्यक हो जाता है। हिन्द–यवन सिक्के कला के सुन्दर नमूने माने जाते है। इतिहास के अध्ययन के रूप में इन सिक्कों का अति महत्वपूर्ण स्थान है। इनका विशेष अध्ययन निम्नांकित बिन्दुओं के रूप में प्रस्ताव्य हो सकता है।

1. धातु–प्रयोग, सिक्कों के मूल्यवर्ग की पहचान, आकार–प्रकार, मुद्रा–ढाँचा इत्यादि।
2. मुद्रालेख तथा मुद्रांकित शासकाकृति की विशेषता। मुद्रालेख की भाषा और लिपि क्या है, लेख–योजना कैसी है, लेखाक्षर स्पष्ट है अथवा अनुमानित। शासक का नाम, विरूद् तथा उसकी आकृति के साथ दर्शाएँ गए अस्त्र–शस्त्र, शासकाकृति की अवस्था एवं परिधान इत्यादि।
3. मुद्रांकित चित्रों के आधार पर अनेक देवत्व की पहचान तथा व्याख्या। हिन्द–यवन शासकों के सिक्कों पर दैवाकृतियों का अंकन एक सामान्य विशेषता थी। इन सिक्कों पर नगर अथवा नगर देवता का अंकन है या कुल अथवा कुल देवता का।
4. हिन्द–यवन शासकों ने इस प्रकार की मुद्रा–श्रृँखला को भी जारी किया था जिसे वंशावली मुद्रा–श्रृँखला नाम दिया जाता है। इस प्रकार के सिक्कों के पृष्ठतल पर शासक का मुद्रालेख यद्यपि पुरोभाग पर किसी पूर्वकालीन शासक

की आकृति का अंकन मिलता है। इससे मुद्रांकित शासक के पूर्वज होने का अनुमान भी किया जा सकता है, जिसकी स्मृति में यह सिक्का जारी किया गया था।

5. प्रस्तुत शासकों की मुद्राओं के आधार पर तिथि–क्रम का निर्धारण।
6. मुद्राओं के आधार पर इनके कुल–सम्बन्ध का निर्धारण इत्यादि।

हिन्द–यवन शासकों की मुद्राओं के महत्व का अनुशीलन तथा ऐतिहासिक समस्याओं के समाधान हेतु उक्त बिन्दुओं के रूप में इनकी मीमांसा का श्लाघनीय प्रयास मेहता वशिष्ठ देव मोहन ने अपने ग्रन्थ में किया है।

अतः हिन्द–यवन शासकों के सम्पर्क में आने के बाद भारतीय मुद्रा निर्माण के क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुआ एवं जिसके विकास का क्रम कुषाण काल तक अनवरत प्रगतिशील रहा, जिसकी जानकारी हमें इनकी मुद्राओं पर अंकित देवी–देवताओं के चिन्हों से प्राप्त होती है।इनकी सहायता से हम हिन्द–यवन एवं कुषाण शासकों के शासनकाल की समीक्षा कर पाते है, जो प्राचीन इतिहास के क्षेत्र में अति महत्वपूर्ण है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अल्तेकर, ए0एस0 – क्वायनेज ऑफ द गुप्ताज इम्पायर, न्यूमिस्मेटिक सोसाइटी ऑफ इण्डिया, 1957।
2. सिंह, आनन्द शंकर – भारत की प्राचीन मुद्राएँ
3. उपाध्याय, वासुदेव – प्राचीन भारतीय मुद्राएँ, पटना, प्रज्ञा प्रकाशन 1971।
4. गुप्ता,पी0एल0 – क्वायंस, नई दिल्ली, नेशनल बुक ट्रस्ट ऑफ इण्डिया, 1969।
5. गुप्ता,पी0एल0 – प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख,विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी 1988।
6. गोयल, श्रीराम – प्राचीन भारतीय अभिलेख संग्रह, भाग–1, जयपुर, 1982।
7. चट्टोपाध्याय, बी. – द एज ऑफ द कुषाणज, ए न्यूमिस्मेटिक स्टडी, पंथी पुस्तक, कलकत्ता 1967।
8. नारायण ए0के0 – द इंडोग्रीक, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1980।
9. बनर्जी, जे0एन0 – डेवलपमेन्ट ऑफ हिन्दू आइकनोग्राफी, कलकत्ता, 1956।
10. मेहता, वशिष्ठ – द इंडोग्रीक क्वांयस, लुधियाना इंडोलाजिकल
11. देव मोहन रिसर्च इंस्टीट्यूट 1967।
12. लाहिरी, ए0एन0 – कार्पस ऑफ इण्डोग्रीक क्वायंस, पोद्दार पब्लिकेशन्स, कलकत्ता, 1965।
13. श्रवा, सत्य – द कुषाण न्यूमिस्मेटिक, नई दिल्ली, प्रनव प्रकाशन, 1985।
14. सरकार, डी0सी0 – स्टडी इन इण्डियन क्वायंस, मोती बनारसीदास दिल्ली 1968।
15. सिंह अरविन्द कुमार – क्वायंस ऑफ द ग्रेट कुषाणाज, परिमल पब्लिकेशन, दिल्ली 1996।
16. सहाय, शिवस्वरूप – प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास, मोतीलाल बनारसीलाल पब्लिकेशन, 2004।